संगोष्ठी उद्देश

- कृषि कार्य उपयोगी मनुष्य एवं पशु चालित यंत्रों की उपलब्धता एवं उपयोगिता सद्यस्थिति का साँझा आंकलन बनाना।
- शोधकर्ता कृषको के यंत्र संबंधित शोधकार्य का अभिलेखन।
- यंत्र प्रचार-प्रसार एवं यंत्र स्वीकृति संबंधित चुनौतिया, सरकारी-गैरसरकारी प्रयास समझना।
- विषय समर्पित संस्थागत रचना निर्मिति एवं समन्वय पर विचार विमर्श, आगामी दिशा।

कौन सम्मिलित हो सकते है ?

- वैज्ञानिक कृषक जिन्होंने यंत्र का निर्माण किया हो।
- सहयोगी कृषक जिसने यंत्र निर्माण प्रक्रिया में योगदान दिया हो।
- यंत्र निर्माण एवं प्रचार-प्रसार में जुडी संस्था प्रतिनिधि।
- निमंत्रित कृषि वैज्ञानिक।
- कृषि यंत्र उत्पादक उद्यमी।
- सामाजिक संगठन के प्रतिनिधि।
- शोध संस्थाओके प्रतिनिधि।
- समाज, शासन नीति अध्ययनकर्ता।

संगोष्ठी विशेषता

- चुनिन्दा यंत्रो की पोस्टर प्रदर्शनी।
- चुनिन्दा यंत्रो की प्रदर्शनी।

अनुसंधान पत्र हेतु मार्गदर्शक तत्त्व तथा समय सीमाएं

पूर्ण अनुसंधानपत्र तथा एब्स्ट्रैक्ट जमा करने की अंतिम तिथि	२२.१०.२०१८
अनुसन्धानपत्र स्वीकृति	३०.१०.२०१८
सुधारित अनुसन्धानपत्र की अंतिम तिथि	१०.११.२०१८
सहभाग हेतु पंजीकरण की अंतिम तिथि	१०.११.२०१८

पूर्ण अनुसन्धान पत्र जमा करने के लिए मार्गदर्शक तत्त्व

पत्र१.५ स्पेसिंग और १२ साइज टाइम्स न्यू रोमन फॉन्ट में बनाये। चित्रण, आकृतियां, मानचित्रावली तथा आरेख निम्नतम तथा काले और सफेद रंग में रखें।

अनुसन्धानपत्र की रूपरेखा

१. पत्रकाशीर्षक
२. सारांश
३. साहित्यसमीक्षा, उद्देष्य, कार्यप्रणाली
४. परिणामोंकाविश्लेषण
५. निष्कर्ष तथा नितियों पर सुझाव

टिप्पणियां / अंतटिपण्णी और ग्रंथसूची

टिप्पणियोंको पाठ में अरबिक अंकों में सुपरस्क्रिप्ट में लिखे, तथा उसका विवरण अंतटिपण्णीमें लिखें। पाठमें सारणी उचित जगहपर और आंकड़ों के उत्पत्तिके साथ लिखें। ग्रन्थसूची मानक स्वरुप में लिखें।

अनुलेखन तथा प्रिंटिंग

संगोष्ठीकी रिपोर्ट सुझावों सहित प्रकाशित होगी। संगोष्ठीकी रिपोर्ट सुझावों सहित एक सन्दर्भ साहित्य के रूप में, देशके कृषकों के समृद्धि हेतु प्रसारित होगी।

१००० शब्दोंमें सारांशनिम्न ईमेल पर भेजे जा सकते हैं.

जानकारी हेतु संपर्क: akp.agricon@gmail.com

वैज्ञानिक तथा तकनिकी जानकारी हेतु:

डॉ. अक्षयाआपटे - ९८२०१९३५७८

अन्य जानकारी हेतु: श्रीमती कृपाबेन व्यास- ९७२३९०३८११

सहभागिता केवल निमंत्रणसे ही संभव।

— आयोजन समिति —

डॉ. शिवेंद्र गुप्ता
अध्यक्ष, कुलगुरू, वी.न.द.गु.वि., सूरत

डॉ. ए. आर. पाठक
सदस्य, कुलगुरू, कृषि विश्व विद्यालय, जुनागड

डॉ. सी. जे. डांगरीया
सदस्य, कुलगुरू, नवसारी कृषि विश्व विद्यालय,

डॉ. पी. एम. पाडोळे
सदस्य, संचालक, वी.एन.आय.टी., नागपूर

श्री. मनोज सोलंकी
सदस्य, अध्यक्ष, ए.के.पी, कच्छ

श्री. रामकुमार
सदस्य, संचालक, सुरुचि ट्रस्ट, बारडोली

श्री. डी.पी. सिंह
सदस्य, डी.एस.डब्लु, शांतीकुंज, हरिद्वार

श्री. तुलसी मावाणी
सदस्य, अध्यक्ष, डॉ. आंबेडकर ट्रस्ट, सूरत

डॉ. गजानन डांगे
सदस्य, सचीव, अध्यक्ष, योजक, पुणे

— तांत्रिक और कार्यकारी समिति —

श्री. ए.व्ही.धडुक
संयोजक, I/C रजिस्ट्रार वी.न.द.गु.वि, सूरत

डॉ. विपुल सोमाणी
सहसंयोजक, प्रा. और प्रमुख म.गांधी ग्रा.अ.केंद्र, वी.न.द.गु.वि, सूरत

डॉ. एन. के. गोंटिया
डीन, एईसी, जुनागड कृषि अभियंत्रकी कॉलेज

डॉ. बी. गुणाकर
सचीव, ए.के.पी.

डॉ. डी. आर. पेशवे
प्रा. वी.एन.आय.टी, नागपूर

डॉ. अक्षया आपटे

अक्षय कृषि एवं ग्राम विकासार्थ

'कृषि कार्य उपयोगी मनुष्यचलित-पशुचलित यंत्र सद्यस्थिती-चुनौतिया एवं आगामी दिशा'

विषयपर राष्ट्रीय संगोष्ठी

स्थान - वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय,सूरत,गुजरात

दिनांक २४ - २५ नवंबर २०१८

— आयोजक —

DAVKT
DR AMBEDKAR VANVASI KALYAN TRUST

VEER NARMAD SOUTH GUJARAT UNIVERSITY

भारत सदियोंसे समृध्द, सुसंप्पन्न, पर्यावरण स्नेही आजीविका एवं उद्यमौके आधार पर वैभव की चरम सीमा का अनुभव लेता रहा था | वैभव की इस अवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार 'प्रकृति' के प्रति हमारा दृष्टिकोण रहा है |भारतीय दृष्टिकोण एकात्म विश्वदृष्टि में विश्वास करता है जिसके अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि, प्रकृति और पर्यावरण के बीच एक अन्योन्याश्रित एवं अविभाज्य संबंध पाया जाता है | हम प्रकृति के प्रति सह-अस्तित्व, सामजस्य और सौहार्द के साथ मातृत्वभाव युक्त सम्मान दृष्टि रखते है |

भारत जैविक विविधता से सजा हुआ देश है | देश में भूमि, फसले, पशु-पक्षी, हवामान, प्राकृतिक रचना, पेड़-पौधे इन सभी में भरपूर विविधता पाई जाती है | इस सारी विविधता को ध्यान में रखकर भारत में कृषि, गोरक्ष, वाणिज्य आधारित अर्थव्यवस्था का विकास किया गया |अपने-अपने परिवेश के अनुसार परंपरागत ज्ञान के साथ स्वानुभव के द्वारा आजीविका चलाने हेतु भरकम प्रयास, संशोधन यहाँ के जनमानस द्वारा किये गए | उसी के चलते आजीविका और संसाधनों का दोहन, जतन, संवर्धन यहाँ साथ-साथ संभव हुआ |

अक्षय कृषि विकास यह भारत की विशेषतः रही है|यहाँ के कृषि क्षेत्र की शाश्वतता यहाँ के कृषि वैज्ञानिको के साथ साथ कृषक वैज्ञानिकों द्वारा किये गये प्रयास, संशोधन इस पर विशेष रूप से टिकी हुई है | भारत में विभिन्न परिस्थिति के कारण समान तकनीक, एकसमान बीज, समान पशु, एकसमान यंत्र, समान फसल पध्दति लागू नहीं हो सकती | यहाँ की भू विविधता, जलवायु, भूधारण क्षमता, कृषि में स्थानीय नवाचार, स्थान विशेषानुसार तकनीकी की आवश्यकता रखती है | इन सभी बातो को ध्यान मे रखकर कृषि से जुड़े सभी क्षेत्र में यहाँ शोध निरंतर चल रहा है |

भारत मे छोटे और सीमांत किसानोंकी संख्या कुल किसान संख्या के लगभग ६० से ७० प्रतिशत है | यह किसान विभिन्न भूमि संरचनाए, कृषि पारिस्थितिकीय रचनाओ में वर्षा आधारित कृषि करते हुए भारत की अन्नसुरक्षा मे सर्वोच्च भूमिका अदा करते है | हमारे यहाँ कृषि एकाकी नहीं है |

कृषि का स्थायित्व पशुपालन के साथ जुडा है | प्रकृति क्रम में कृषि एवं पशुपालन एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित एवं पूरक है | सुदूर ग्रामीण अंचलो में कृषि और पशु स्थानीय रोजगार के सर्वाधिक अवसर आज भी उपलब्ध कराते है |

इस तथ्य को सम्मुख रखकर कृषि कार्य उपयोगी मनुष्य चालित तथा पशुचालित यंत्र निर्मिती एवं उपयोग भारतीय कृषि की विशेषता रही है| विभिन्न फसल के बुवाई से लेकर मूल्यवर्धन के लिए उपयोगी यंत्र यहाँ उपयोग में दिखाई देते है| यंत्र निर्मिति का प्रधान उद्देश कुशलता आधारित उत्पादन वृद्धि, रोजगार निर्मिति तथा कृषि कार्य में पशू, मनुष्य श्रम को घटाना रहा है |

जनसंख्या वृद्धि के चलते छोटे, सीमांत किसानो की बढ़ती संख्या, सुयोग्य कृषि-नीति का अभाव और जलवायु परिवर्तन के कारण इस क्षेत्र की बढ़ती अनिश्चितता, समस्याएयह विषयआज भारत का सर्वोच्च चिंता तथा चिंतन का विषय है | विभिन्न सरकारी शोध संस्थाएं, सेवाभावी संस्थाएं ,कृषि वैज्ञानिक तथा कृषक वैज्ञानिक निरंतर कृषि उपयोगी यंत्र निर्माण में जुटे हुए है परन्तु इन यंत्रो का प्रचार-प्रसार तथा स्वीकृति अपेक्षा से कम है | इससे इस क्षेत्र की समस्याए और जटिल दिखाई दे रही है |

समय की आवश्यकता को ध्यान में रख कर अक्षय कृषि एवं ग्राम विकास के लिये **"कृषि कार्य उपयोगी मनुष्य व चालित यंत्र : सद्यस्थिति, चुनौतिया एवं आगामी दिशा"** इस विषयपर दो दिवसीय **राष्ट्रीय संगोष्ठी** का आयोजन किया जा रहा है |

— आयोजक —

महात्मा गांधी ग्रामीण अध्ययन विभाग, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय

वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्विद्यालय अंतर्गत 1970 में स्थापित महात्मा गाँधी ग्रामीण अध्ययन विभाग छात्रों में नैदानिक क्षमताओं का विकास करता है ताकि उन्हें ग्रामीण जनोंके समक्ष आने वाली समस्याओं के मूल कारणों की पहचान करने में सक्षम बनाया जा सके। यह अपने स्वयं के अंत:विषय विभाग में से एक जिसकी सीखने, अनुसंधान करने और विस्तारमें मजबूत जड़ें हैं।

अक्षय कृषि परिवार

अक्षय कृषि परिवार एक राष्ट्रीय स्तर का स्वयंसेवी संगठन है जो नीति निर्माण में सिफारिश, अनुसंधान और जागरूकता निर्माण, किसानों को भारतीय कृषि चिंतन के आधार पर अक्षय खेती के प्रशिक्षण देने और प्रेरित करने के लिए समर्पित है जो प्रकृति साम्य का समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है|

डॉ. आंबेडकर वनवासी कल्याण ट्रस्ट, सूरत

डॉ.आंबेडकर वनवासी कल्याण ट्रस्ट नारायण द्वारा सृजित नर की सेवा के उद्देश्य से प्रेरित तथा दक्षिण गुजरात के डांग जिले के अपने वनवासी बन्धुओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए १९९९ में स्थापित एक सेवा प्रकल्प है| वर्तमान में ट्रस्ट द्वारा दक्षिण गुजरात के जनजातियों और अन्य समुदायों के लिये सामुदायिक सेवा की विभिन्न परियोजनाएं और कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं|

— सहकारी —

देव संस्कृती विश्वविद्यालय, शांतिकुंज, हरिद्वार

विश्वविद्यालय की स्थापना २००२ में वैज्ञानिक अध्यात्म के आधार पर और आध्यात्मिक जीवन शैली से युक्त एक उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षणिक प्रणाली की मांग को पूरा करने के लिए की गयी थी|

कृषि हस्त यंत्र एवम् उपकरण अनुसंधान संस्थान, सुरुचि, बारडोली

खादी ग्रामोदय प्रयोग समिति, अहमदाबाद ने १९५९ में बारडोली में कृषि हस्त यन्त्र एवं उपकरणों में अनुसंधान और विकास के लिए एक शाखा के रूप में कृषि यंत्र संशोधन केंद्र का प्रारंभ किया | प्रारम्भ से ही केंद्र द्वारा विशिष्ट क्षेत्रों के लिए विकसित किये गये विभिन्न कृषि उपयोगी हस्त यन्त्र लोकप्रिय रहे हैं|

Objectives of the conference:

- To assess the current status on availability, accessibility and usage of Human and Animal driven equipments used in agriculture
- Documenting efforts of innovative farmers regarding development of agricultural equipments.
- Understanding the challenges in government and non-government efforts in facilitating acceptability and propagation of these equipment.
- Deliberation on establishment and integration of institution devoted to the subject and way forward

Who can participate:

- Farmer inventors who have developed agricultural equipment.
- Farmer inventors who have assisted in the development of agricultural equipment.
- Representatives who have been associated with manufacturing and propagation or marketing of such equipment.
- Invited agricultural scientists.
- Manufacturers of agricultural equipment and entrepreneurs working in this area.
- Representatives of social organizations.

Salient feature of the conference:

- Poster presentation on selected equipment.
- Presentation of selected equipment

Time Schedule and Guidelines for submission of full length papers

Submission of full length paper along with abstract	22.10.2018
Paper Acceptance Communication	30.10.2018
Final Submission of the paper	10.11.2018
Last date for registration for participation	10.11.2018

Guidelines for Submission of Full Length Research Papers:

The paper should be in 1.5 space and 12 size Times New Roman font. Illustrations, figures, maps and graphs should be prepared in black and white and be kept to a minimum.

Structure of the paper;

1. Title of the paper
2. Abstract
3. Reviews, Objectives and Methodology
4. Discussion of the results
5. Conclusion with policy suggestion

Notes/Foot/End Notes and References:

Notes should be numbered in Arabic numerals as superscripts inside the text, and their details should appear as end notes. Tables should appear along with their data sources in the appropriate places inside the text. Reference(s) must be followed in standard format.

Documentation and printing:

The conference report including recommendations will be published.

Extended abstracts up to 1000 words can be sent to:

akp.agricon@gmail.com

For further information, please contact For Scientific and technical queries: Dr.Akshaya Apte: 09820193578

For logistic and other support:

Mrs.Krupaben Vyas: 9427152221

Participation will be by invitation

— Organising Committee —

Dr. Shivenra Gupta
Chairman VC, VNSGU, Surat

Dr. A. R. Pathak
Member VC, JAU, Junagadh

Dr. C. J. Dangaria
Member VC, NAU, Navsari

Dr. P. M. Padole,
Member Director, VNIT, Nagpur

Shri. Manoj Solanki
Member President, AKP, Kacchh

Shri. Ramkumar
Member Director, Suruchi Trust, Bardoli

Shri. D.P. Singh
Member DSVV, Shantikunj, Haridwar

Shri. Tulsi Mavani
Member President, Dr. Ambedkar Trust, Surat

Dr. Gajanan Dange
Member Secretary President, YOJAK, Pune

— Technical & Management Committee —

Shri.A.V.Dhaduk
Coordinator, I/C Registrar VNSGU,Surat

Dr. Vipul Somani
Co-coordinator, Prof.& Head MG Dept.of Rural Studies, VNSGU,Surat

Dr. N. K. Gontia
Dean, AEC, Junagadh Agril Engg. College

Dr. B. Gunakar
Secretary, AKP.

Dr. D. R. Peshwe
Prof. VNIT, Nagpur

Dr. Akshaya Apte

For Sustainable Agriculture and Rural Development National Conference

'Human and Animal Driven Equipment: Status, Challenges and Way Forward'

Venue: Veer Narmad South Gujarat University, Surat, Gujarat

24th – 25th November 2018

– Organisers –

DAVKT

DR AMBEDKAR VANVASI KALYAN TRUST

VEER NARMAD SOUTH GUJARAT UNIVERSITY

Bharat, for ages has been prosperous, flourishing nation aligned to the ecological sustenance. It has been thriving economically by way of ecofriendly livelihood and trade with rest of the world. This resourcefulness and economic well-being was due our perspective about nature and environment. Bharat believes in "Ekatma Vishvadrishti", according to which, the creation, nature and environment are interconnected and inseparable. We have a compassionate and harmonized co-existence with Mother Nature.

Bharat has diverse geographies with varied crop patterns, flora, fauna, climatic zones and terrains. Bharat has evolved its agro-centric, cow-centric, trade based economy considering this vast diversity. People of this nation developed the resources for their livelihood based on their ancient knowledge in accordance with the habitat they were living in. This enabled the sustainable use, preservation and enrichment of resources sustaining livelihoods.

Sustainable agricultural development (Akshay Krushi Vikas) has been a peculiarity of Bharat. The agricultural sustenance of this country is due to the legacy of efforts put in by agricultural scientists together with the explorative farmers with scientific mindsets. The appropriation of technologies in this nation should be considering the geographic diversity, climatic zones, land holding and local habitat.

About 60%-70% of the farmers in Bharat fall under the category of small and marginal. These farmers, in their own agro-climatic zones and geographies practice the agriculture primarily dependent on monsoon. Marginal farmers play significant role in food security of the nation. In Bharat, the stability of agricultural has been associated with the animal husbandry. Agriculture and animal husbandry are complimentary and inseparable. These two sectors are sources of livelihood in rural areas. Considering this fact, development of equipments driven on human and animal energy has been peculiarity of Bharatiya agricultural sector. The primary purpose of equipment had been, skill based increase in production capacity, livelihood generation and reducing the drudgery of humans and animals.

Ever increasing population, increasing number of small and marginal farmers, lack of appropriate agricultural policies, uncertainties on account of climate change, accords priority to the current subject for the sustainable agriculture and development of rural India. Despite of relentless efforts by government research institutions, non-government organizations and farmer scientists for devising the small agricultural equipment, there is lack of prevalence and acceptance of such equipment today. The situation is seen worsening despite all the efforts.

Realizing the need of the hour, a two day national conference is organized on the subject of **"Human and Animal Driven Equipment for sustainable agriculture and rural development : Status, Challenges and Way Forward"**

— ORGANIZERS —

Mahatma Gandhi Department of Rural Studies, South Gujarat University

Established in 1970, the Mahatma Gandhi Department of Rural Studies inculcates diagnostic abilities in the students so as to make them competent to identify the root causes of the problems faced by rural people. It is one of its own kind of interdisciplinary department having strong roots in learning, research and extension.

Akshaya Krishi Pariwar

Akshay Krishi Pariwar is a National level voluntary organization dedicated to policy advocacy, research and awareness generation, training & motivating farmers to shift to sustainable farming based on Bharatiya Krishi Chintan which provides holistic approach in harmony with nature.

Dr Ambedkar Vanvasi Kalyan Trust, Surat

Inspired by the aim of serving God through the people created by him and keeping in mind the needs of our tribal brethren living in Dang district of South Gujarat, Dr Ambedkar Vanvasi Kalyan Trust was set up in 1999 as a service project. In the course of time various projects and programmes of community service are going on among tribals and non tribals of South Gujarat.

— CO-PARTNERS —

Dev Sanskriti Vishwavidyalaya(University) Shantikunj, Haridwar,Uttarakhand

The University was established in 2002 to meet the pressing need of a high quality educational system based on scientific spirituality and grounded in a spiritual life style.

Agricultural Tools Research Centre(ATRC) Suruchi, Bardoli

Khadi Gramoday Prayog Samiti,Ahmedabad in 1959 opened a branch at Bardoli for research & development in agricultural hand tools & implements. Since inception number of area specific hand tools are developed and popularised by the centre.